E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी की स्थिति

शोधार्थी :
अनिल शाक्य
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर (म.प्र.)

द्वारा निर्देशित :
डॉ. प्रतिभा जोशी
सहायक प्राध्यापक
एम. एन. डी. सी.
धामनोद धार

Paper Received date
05/02/2026
Paper Publishing Date
10/02/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.18919008

शोध–प्रपत्र

भारत विकास के रास्ते पर है। यहाँ के महानगर विदेशी नगरों के साथ होड़ करने में सक्षम हैं फिर भी भारत की आत्मा गाँवों में बसती है क्योंकि यथार्थ भारत की जिंदगी वहाँ पनपी है। इसलिए आज के कथा साहित्यकारों भी अपने लेखन की पृष्ठभूमि के लिए गाँव को चुना है। हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों ने समाज में फैली बुराइयों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया है।

समकालीन दौर विशेष रूप से 20वीं सदी के आखिरी दो दशकों को महिला रचनाधर्मिता के विस्फोट का समय कहा जा सकता है। इस दौरान महिलाओं द्वारा लिखा गया कथा साहित्य ष्कालजयीश कहने योग्य है। तब से पुरुष लेखन के समान महिला लेखन भी समाज में असर डालने लगा। ''इसी समय की महिला लेखिकाओं ने स्त्रियों की भीतरी और बाहरी तकलीफों की सच्ची अभिव्यक्ति दी। समकालीन महिला कथाकारों ने केवल एक श्टाइपश न होकर समाज के सभी संदर्भों का उद्घाटन करके अपने समय की पुर्नरचना की।''

ग्रामीण जीवन की धूल–मिट्टी से बने अनुभव संसार मे मैत्रेयी पुष्पा ने सर्वाधिक प्राथमिकता नारी की स्थिति को ही दी है। उनका लेखन यह सिद्ध करता है। की वे स्त्री–पुरुष समानता की। उन्होंने ग्रामीण स्त्री के गिरने, उठने संभलने के साथ अपने लक्ष्य की ऐसी इबारत रची है जो साहित्य जगत मे अवेक्षणीय है।

गाँव के समाज में नारी की पीड़ा और उनमें तथा उसके संघर्ष को वर्णित करते उपन्यास संवेदनाओं से युक्त है और उनमें औरतों के अतीत और वर्तमान के जुल्म की कथा को सूचनात्मक रूप में प्रस्तुत करते हुये यह व्यक्त करते हैं कि इतिहास पन्नों पर उतरने से पहले मानव शरीर पर लिखा जाता है। स्वतंत्रता के 78 वर्षों के पश्चात् भी गाँव की स्त्रियों की स्थिति यथावत् बनी हुई है। उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं आया है. किंतु चाक उपन्यास में सामाजिक बंधनों को तोड़ने का प्रयास किया गया है, उन संस्कारों को समाप्त करने का प्रयास किया गया है. जो स्त्रियों को दबाने व शोषण करने के लिए बनाये गए हैं।

चाक अर्थात् समय चक्र चक्र निर्माण भी करता है और विनाश भी किंतु इसके साथ यह समय का साक्षी भी है। उपन्यास का उद्देश्य उसके शीर्षक द्वारा जाना जा सकता है। पहले से चले आ रहे सामाजिक रूढियों व संस्कारों में जब भी परिवर्तन होता है तो कुछ मूल्य और विश्वास टूटते हैं।

हर विकास परम्परागत मान्यता अर्थात रूढि को बदलता और तोड़ता है। उपन्यास चाक में कलावती चाची का संवाद इसी बात को पुष्ट करता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

''ए भगमान, ऐसा दिन भी आना था जिन्दगानी में चाल चलन बचाते–बचाते उमर निकल गई पर आज अपने ही मन से सुरंग नसैनी चढ़ गई जिन्दगानी घसीटने वाले ताड़फड़े वाले लल्लू शीश उठाकर ठाड़े हो गए। सात जन्म के पुन्न कमाए मैंने कि मरता हुआ आदमी जिंदा हो गया। सारंग इससे बड़ा सुख क्या होगा। इतना जबर संतोष।''

कलावती चाची का ही एक अन्य संवाद भी इस बात का प्रमाण है कि परंपरागत मान्यता या रूढि को बदलता जो स्त्री के हक में हो।

''अरी हम जाटिनी हैं, जेब में बिछिया धरे फिरती हैं। मन आया ता के पहर लिए कौन सी पल्ली (प्रलय) हो गई?''

भारतीय रीतिरिवाज में विवाह संबंधित कई चिह्न या मान्यता है जिसे एक विवाहित स्त्री धारण करती है या प्रयोग करती है। यहाँ समाज की ऐसी ही रीति रिवाजों को चुनौति दी जाती है, जो मैत्रेयी जी अपने पात्रों के माध्यम से जगह–जगह दिखाती हैं।''

मैत्रेयी जी का कथा साहित्य यह दर्शाता है कि समय का चाक अब बदल चुका है और निर्णय करने की बारी तो अब स्त्रियों की है। चुनाव व वरण करने का जो अधिकार सिर्फ पुरुषों के पास था इसे चुनौती देते हुए वरण के अधिकार को अपने हक में रखने के प्रखर स्वर को सशक्तता से समाज के सामने रखने की वकालत मैत्रेयी जी करती है।

उपन्यासों में गाँवों के बदलते रूप और विडंबना को भी दर्शाया है। इनमें स्त्री की अपनी सोच है और वो विकास के लिए संघर्ष करने से पीछे नहीं हटती। इसमें सिर्फ गाँव की कथा ही नहीं बल्कि भारत के सभी पिछड़े गाँव का दस्तावेज है। अपने रीति–रिवाजों, जाति संघर्षो गीतों, उत्सवों, नृशंसताओं, प्रति हिंसाओं प्यार, ईष्या और कर्मकांडी अविश्वासों के बीच धड़कता हुआ गाँव आपसी संबंधों के उतार–चढ़ाव में समय को आत्मसात कर रहा है– सारंग पूछना चाहती है–रंजीत मैंने तुम्हारी कही हुई बात ही तो व्यवहार में उतार दी। तुम उसे चाल–चलन खराब होना मान बैठे। सफाई दूँ भी तो क्या कहकर ?''

निष्कर्षतः कहा जा सकता है की बदलते हुए सामाजिक–ग्रामीण परिदृश्य में मैत्रेयी जी ने अपनी लेखनी से नारी के स्वर को मुखरित किया है जिसके केन्द्र में नारी है, नारी का स्वर है, नारी के विचार और भावनाएँ है।

संदर्भ सूची

1. डॉ सुमा पी. राय– मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में मानवीय संवेदना, लोक प्रकाशन गृह, दिल्ली संस्करण – 2010, पृ.स. 124
2. मैत्रीयी पुष्पा, चाक, पृ. 50 डॉ रमण भाई पटेल सातवे दशक के हिन्दी उपन्यास, पृ. 28
3. मैत्रीयी पुष्पा, चाक, पृ. 50 डॉ रमण भाई पटेल सातवे दशक के हिन्दी उपन्यास, पृ. 28
4. मैत्रीयी पुष्पा, चाक, पृ. 50 डॉ रमण भाई पटेल सातवे दशक के हिन्दी उपन्यास, पृ. 28
5. मैत्री पुष्पा, चाक, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2004 पृ.स.56